

Unit IV

Q No. 4 : What is Value Realization? Explain it levels.

मूल्यबोध के स्तर या सोपान का वर्णन कीजिये |

Synopsis :

- **Introduction**
- **Meaning of Value Realization**
- **Definition of Value Realization**
- **Levels of Value Realization**
- **Conclusion.**

INTRODUCTION

WHAT IS VALUE REALIZATION ?

Realization means Understanding & Comprehending.

Value realization means value is delivered to implementation, integration, training, help, content and support. Value realization is teaching and learning about the ideals that society deems importance the aim is for students not only to understand the values but also reflect them in their attitude and behaviour in contribute to the society through good citizenship and ethics.

मूल्यबोध के माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न मूल्यों का बोध होता है जिसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं, अनेक प्रकार की

आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है, जो किसी भी मूल्यों को समझने के लिए आवश्यक होती है |

Meaning of Value Realization

संस्कृत में बोध का अर्थ है, विचार, चिंतन, समझ, प्रतिभा | हिंदी में बोध का अर्थ है, ज्ञान एवं जानकारी | मूल्यबोध से तात्पर्य व्यक्ति का विभिन्न मूल्यों के प्रति समझ, विचार एवं चिंतन इत्यादि | मूल्यबोध ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति विभिन्न मूल्यों के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करते हैं।

मूल्यबोध की परिभाषा : (Definition)

रामराज सिंह के अनुसार : “मूल्यबोध के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न प्रकार के मूल्यों के प्रति अपनी समझ, चिंतन एवं लगाव को व्यक्त करता है, जिससे व्यक्ति को मूल्य चयन में सहायता प्राप्त होती है |

शर्मा आचार्य के अनुसार : मूल्यबोध मूल्य निर्माण का एक सोपान है, जिसके पश्चात व्यक्ति को मूल्य ग्रहण करने में सहायता प्राप्त होती है |

DEFINITION OF VALUE REALISATION

Value realization is effort that creates a quantifiable benefit that accrues to a stakeholder. An example **of value creation** would be **creating** greater efficiency within a department. These are the kind **of** results that accrue benefits to key stakeholders.

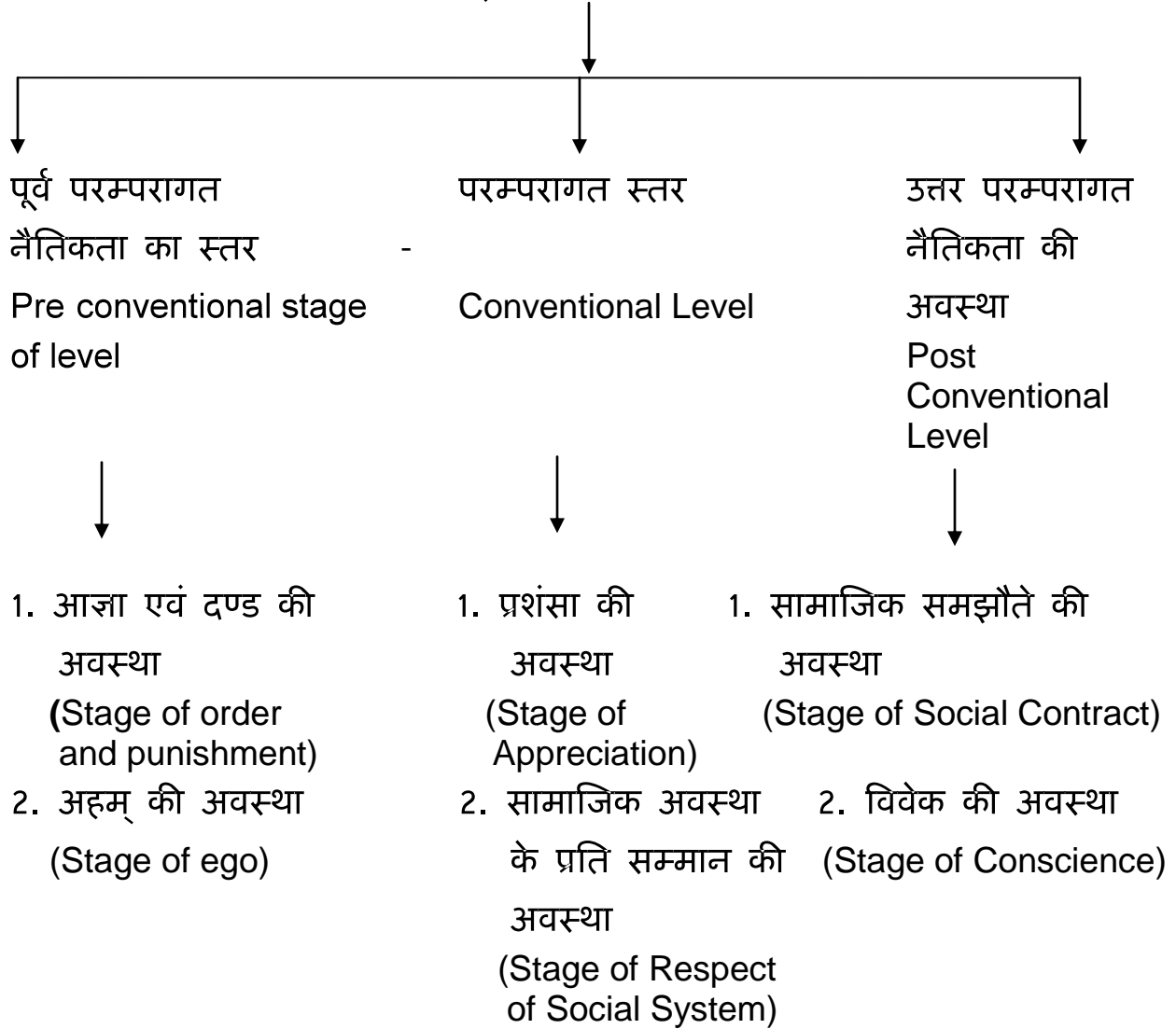
According to Feather 1994 : Value realization is values which are general beliefs about particular behaviour and goals which include the dimensions of good and evil and state a moral imperative and necessity. These values represent the best most accurate and use useful things in a society. These are not personal desires or request but are values that have been accepted by groups and communities as good for everyone.

LEVELS OF VALUE REALIZATION (मूल्यबोध के स्तर)

LEVELSTAGE	DESCRIPTION
Pre-conventional level Stage I Punishment and obedience Orientation in questioning deference to power are valued in their own right.	Morality judged in terms of consequences.
Stage II Native Hedonistic Orientation.	Morality judged in terms of what satisfies one's needs or those of others.
Post Conventional Level Stage III Good boy/good Girl Orientation	Morality judged in terms of adherence to social rules or norms with respect to personal acquaintances.
Stage IV Social order maintaining orientation	Morality judged in terms of social rules or laws applied universally, not just to acquaintances.
Post Conventional Level Stage V Legalistic Orientation	Morality judged in terms of human rights which may transcend laws.
Stage VI Universal ethical principal orientation	Morality judged in terms of self-chosen ethical principles.

OR (अथवा)

मूल्यबोध के स्तर



I. पूर्व परंपरागत नैतिकता का स्तर (Pre-Conventional stage of level)

इस स्तर पर बालक मूल्य एवं नैतिकता की अनुभूति स्वविवेक के आधार पर न करते हुए बाहरी तत्व के आधार पर करता है, इस स्तर की विशेषताएं 9 वर्ष से कम आयु के बच्चों में पाई जाती हैं | इस स्तर को दो स्तरों में व्याख्या किया गया है |

1. आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (Stage of Order and Punishment):

इस स्तर पर बालक प्रत्येक प्रकार के अनैतिक कार्य करता है, जिससे उसे दण्ड भुगतना पड़ता है, तथा बच्चों को यह ज्ञात हो जाता है कि, यदि आज्ञा का पालन नहीं किया जाये तो दण्ड अवश्य प्राप्त होगा।

2. अहम् की अवस्था (Stage of Ego)

इस स्तर पर बालक की आयु में वृद्धि होने के बाद बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं पूरा करने लगता है, और बालक की जो आवश्यकताएं जैसे भी पूरी हो रही हैं उसे वो मूल्य मान लेता है।

II. परम्परागत स्तर (Conventional Level)

बालक दण्ड एवं भय के आधार पर मूल्यों की अनुभूति को ग्रहण नहीं करता बल्कि परिवार मित्र एवं समाज से सम्मान की अपेक्षा के कारण मूल्यपूर्ण व्यवहार करता है।

1. प्रशंसा की अवस्था (Stage of Appreciation)

इस स्तर पर बालक प्रशंसा प्राप्ति की भावना से मूल्यों को अपनाते हैं। बालक प्रशंसा एवं निंदा के मध्य अंतर को समझने लगते हैं।

2. सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (Stage of Respect of Social System)

इस स्तर में बालक समाज द्वारा बनाये गए नियमों को मानने लगता है, जिससे बालक ये समझता है कि, समाज द्वारा बनाये गए नियमों से उसको प्रशंसा प्राप्त होगी।

III. उत्तर परंपरागत नैतिकता की अवस्था (Post Conventional Level)

इस स्तर पर मूल्य एवं नैतिकता पूर्ण रूप से आंतरिक कारकों पर निर्भर करता है यह मूल्य एवं नैतिकता का उच्च स्तर होता है।

1. सामाजिक समझौते की अवस्था (Stage of Social Contract)

इस स्तर पर व्यक्ति समाज के बनाये गए मूल्यों एवं नियमों का पालन करता है, और वह यह मानता है की समाज के द्वारा बनाये गए मूल्य व्यक्ति की भलाई के लिए हैं ।

2. विवेक की अवस्था (Stage of Conscience)

इस अवस्था में व्यक्ति को अच्छे एवं बुरे के मध्य निर्णय करने में सक्षम होता है । व्यक्ति अपने विवेक के आधार पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों को अपनाते हैं ।

Conclusion

मूल्यबोध के माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न मूल्यों का बोध होता है, जैसे नैतिक मूल्य, प्रेम, सत्य, न्याय, सदाचार, धर्म निरपेक्षता आदि, तथा मूल्यबोध के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में इन मूल्यों को अपनाता या ग्रहण करता है । मूल्यबोध के माध्यम से व्यक्ति मूल्यों के विषय में अनेक प्रकार की आवश्यक जानकारी प्राप्त करता है, जो किसी भी मूल्य के संप्रत्य को समझने के लिए अवश्यक होती है ।

गोविन्द चन्द्र पाण्डेय के अनुसार : “मूल्यबोध को बुद्धिवाद, भोगवाद एवं मुक्तिवाद प्रभावित करता है । इसी कारण विभिन्न व्यक्तियों के मूल्यबोध में अंतर देखने को मिलता है ।